Second Year T.D.C.(Arts) Examination, 2001
PRAKRIT
Paper-I
Agam Sahitya, Shilalekh evem Vyakarana

Time : 3 Hours
[Maximum Marks :100]

1. नायाधम्मकहा का सामान्य परिचय देते हुए इसके षष्ठ अध्ययन के विषय-वस्तु की संक्षेप में व्याख्या करें **14**

अथवा

जैन आगम साहित्य में नायाधम्मकहा का स्थान-निर्धारण करें।

2 कणकुण्डगं चइत्ताणं विट्ठं भुजइ सुयरे। **15**
एवं सीलं चइत्ताणं दुस्सीले रमई मिए।।
उपर्युक्त गाथा की ससंदर्भ व्याख्या करें तथा 'मिए' पद का विश्लेषण करें।

अथवा

उत्तराध्ययन नाम की सार्थकता बताते हुए निम्नलिखित गाथा की सप्रसंग व्याख्या करें।
जई तं काहिसि भावं जा जा दिच्छसि नारिओ।
वाया विद्धुव्व हडो अट्ठिअप्पा भविस्ससि।।

3. चौर्यदोष और द्यूतदोष का श्रावकाचार के आधार पर वर्णन कीजिए तथा इन दोषों की यौक्तिकता पर अपने विचार प्रस्तुत करें। **15**

अथवा

मधु एवं मांस-सेवन को क्यों दोषपूर्ण माना है? पाठ्यांश के आधार पर इस ग्रंथ रचना के सामान्य उद्देश्य को व्याख्यायित करें।

4. (अ) अर्धमागधी आगम साहित्यों की संख्या बताएं तथा किन्हीं दो आगमों का संक्षिप्त परिचय दीजिए। **8**

अथवा

शौरसेनी आगम कितने है? षट्खण्डागम में पूर्वों का अन्तर्भाव कैसे हुआ? कोई एक शौरसेनी आगम का संक्षेप में परिचय दीजिए।

(ब) दृष्टिवाद किस आगम परम्परा के अन्तर्गत आता है? शौरसेनी व अर्धमागधी आगम साहित्य कौन-कौन से सम्प्रदाय परम्परा से सम्बन्धित है? -अपने विचार प्रस्तुत करें। **8**

अथवा

षट्खण्डागम कसायपाहुड एवं महाबन्धों में से किसी एक की विषय-वस्तु पर प्रकाश डालें।

5. अ,ब,स, में से किन्हीं दो पाठों कर हिन्दी में अनुवाद कीजिए। **8+8**
(अ) देवानं प्रियो पियदसि राजा एवं आह। सवत विजिते मम युता च राजुके च प्रादेसिक च पंचसु पंचसु वासेसु अनुसंयानं नियातु एतायेव अथाय इमाय धमानुसस्थिय यथा अञां -य कंमाय। साधु मातारि च पितरि च सुस्रुसा मित्र संस्तुतञातीनं बामृण समणानं साधु दानं प्राणानं साधु अनरंमो अपव्ययता अपभाड्ता साधु। परिसापि युते आञपयिसति गणनायं हेतुतो च व्यंजनतो च।

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com

(ब) ओसुढानि च यानि मनुसोपगानि च पसोपगानि च यत यत नास्ति सर्वत्रा हारा पितानि च रोपापितानि च। पंथेसु कूपा च खाना-पिता बछा च रोपापिता परिभोगाय पसुमनुसानं। ते सबपाषंडेसु व्यापता धार्माधस्टानाय.....धंमयुतस च योम कंबोज गंधारानं रिस्टिक पेतेणिकानं ये वापि अञे आपराता। मतमयेसु व ....सुखाय धमयुतानं अपरिगोधाय वयापता ते।

(स) पुत्रा च पोत्रा च प्रपोत्रा च देवानं प्रियस प्रियदसिनो राञो प्रवधयिसंति इदं धंमचरणं आव संवटकपा धंमम्हि सीलम्हि तिस्टंतो धंमं अनुसासिसंति। एस हि सेस्टे कंमे य धंमानुसासनं। इयं धंमलिपी देवानं प्रियेन प्रियदसिना राजा लेखापिता। इध न किंचि जीवं आरभित्पा प्रजूहिनथं । नच समाजो कतव्यो। बहुकं हि दोसं समाजम्हि पसति देवानंप्रियों प्रिसद्रसि राजा।

6. अशोक के शिलालेख भिन्न अन्य प्राकृत शिलालेखों का सामान्य परिचय दें। **12**

अथवा

पाठ्यांश के आधार पर अशोक के चारित्रिक वैशिष्ट का वर्णन करें।

7. शौरसेनी अथवा अर्धमागधी प्राकृत के सामान्य लक्षण बताएं। **12**

PDF created with FinePrint pdfFactory trial version http://www.fineprint.com